जहाँ चाह वहाँ राह

इला सचानी छब्बीस साल की हैं। वह गुजरात के सूरत जिले में रहती हैं। वे अपंग हैं। उनके हाथ काम नहीं करते। लेकिन इससे इला जरा भी निरुत्साहित नहीं हुईं। उसने अपने हाथों की इस कमी को तहे-दिल से स्वीकार करते हुए अपने पैरों से काम करना सीखा। दाल-भात खाना। दूसरों के बाल बनाना, फर्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना, तख्ती पर लिखना जैसे काम उसने पैरों से करना सीखा। उसने एक स्कूल में दाखिला ले लिया। पहले तो सभी उसकी सुरक्षा और उसके काम की गति को लेकर काफी चिंतित थे। लेकिन जिस फुर्ती से इला कोई काम करती थी, उसे देखकर सभी हैरान रह जाते थे। कभी-कभी किसी काम में परेशानी जरूर आती थी लेकिन इला इन परेशानियों के आगे झुकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की परन्तु दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर पाई क्योंकि वह दिए गए समय में लिखने का काम पूरा नहीं कर पाई। समय रहते अगर उसे यह मालूम हो जाता कि उसे ऐसे व्यक्ति की सुविधा मिल सकती थी जो परीक्षा में उसके लिए लिखने का काम कर सके तो शायद उसे परीक्षा में असफलता का मुँह नहीं देखना पड़ता। उसे इस बात का बेहद दुःख है।

इला की माँ और दादी कशीदाकारी करती थीं। वह उन्हें सुई में रेशम पिरोने से लेकर बूटियाँ उकेरते हुए देखती। और एक दिन उसने कशीदाकारी करने की ठान ली, वह भी पैरों से। दोनों अंगूठों के बीच सुई थामकर कच्चा रेशम पिरोने जैसा कठिन कार्य उसने काफी धैर्य और विश्वास से करना शुरू किया। पन्द्रह-सोलह साल के होते-होते इला काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी। किस वस्त्र पर किस तरह के नमूने बनाए जाएँ, कौन-से रंगों से नमूना खिल उठेगा और टाँके कौन-से लगें, गें, यह सब वह अच्छी तरह समझ गई थी। और बहुत जल्दी उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की गी। इन परिधानों में काठियावाड के साथ-साथ लखनऊ और बंगाल की भी झलक थी। उसने पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। प्रदर्शनी में आए लोगों ने उसकी कला को काफी सराहा। इस प्रकार इला 'जहाँ चाह वहाँ राह' जैसी उक्ति को शत-प्रतिशत चरितार्थ करती है। वह सबके लिए प्रेरणा की स्रोत है।

शब्दार्थ :

टाँका- हाथ की सिलाई।
अनूठी- अभुत।
मिसाल- उदाहरण।
विष- जहर।

घुटने टेकना- झुकना।
कुदरत- प्रकृति।
माहिर- अव्वल।
परिधानों की- पोशाकों की, वस्त्रों की।
इस्तेमाल- प्रयोग।
नवीनता- नयापन।
अनूठा- बेमिशाल।

Short Questions

प्रश्न 1: इला का पूरा नाम क्या है ?
उत्तर: इला का पूरा नाम इला सचानी है ।

प्रश्न 2: इला सचानी कहां रहती है।
उत्तर: इला सचानी गुजरात के सूरत जिले में रहती है।

प्रश्न 3: लेख में बच्चों के कौन से खेलों का जिक्र हुआ है?
उत्तर: पिटपिटी बजाना, गिट्टे खेलना, पिट्ठू, झुला झुलना, पकड़म-पकड़ाई , विष-अमृत और धप्पा आदि ।

प्रश्न 4: बच्चे झूले पर पेंगे लेते हुए क्या गाते थे ?
उत्तर: कच्चे नीम की निंबौरी
सावन जल्दी अईयो रे!

प्रश्न 5: इला अपने पैरों से कौन से काम कर लेती थीं?
उत्तर: दाल- भात खाना, बाल बनाना, फर्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना, तख्ती लिखना आदि ।

प्रश्न 6: इला पढ़ते हुए कौन सी कक्षा तक पहुँची?
उत्तर: इला पढ़ते हुए दसवीं कक्षा तक पहुँची।

प्रश्न 7: इला दसवीं की परीक्षा क्यों पास नहीं कर पाई ?
उत्तर: इला को यह मालूम न था की परीक्षा के लिए उसे अतिरिक्त समय और लिखने के लिए दूसरा व्यक्ति मिल सकता है। इसलिए वह दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर पाई ।

प्रश्न 8: इला कौन सी कढ़ाई मैं माहिर थी?

उत्तर: इला काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर थी।

प्रश्न 9: क्या इला की मेहनत रंग लाई?
उत्तर: हाँ, इला की मेहनत और हौंसले ने उसे माहिर कशीदाकार बना दिया।

प्रश्न 10: इला यह सब कैसे कर पाई?
उत्तर: इला ने जीवन में कभी हार नहीं मानी। मेहनत करती रही और असंभव को संभव बना दिया।